بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-08.09.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

जलसा सालाना जर्मनी का सफल आयोजन, प्रबन्धकों तथा कार्यकर्ताओं का स्वर्णीय उपदेश तथा शामिल होने वाले अतिथियों की अभिव्यक्तियाँ।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 08 सितम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला का अत्यंत फ़ज़्ल व उपकार है कि जर्मनी जमाअते अहमदिया का जलसा गत सप्ताह सफलता पूर्वक आयोजित हुआ। सबसे पहले तो हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए कि उसने हमें एक लम्बे अन्तराल के बाद विराट स्तर पर सामान्य अवस्थानुसार जलसा आयोजित करने का सामर्थ्य प्रदान किया।

प्रबन्ध कर्ताओं तथा जलसे में शामिल होने वालों को अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए, कार्यकर्ताओं को भी शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया। इस विराट व्यवस्था में अनेक स्थानों पर कमियाँ रह गई होंगी, कुछ अतिथियों को भी कठिनाई का सामना करना पड़ा, परन्तु चूंकि दीन के उद्देश्य से आए थे इस लिए उन्होंने कोई शिकायत नहीं की, किन्तु मुझे पता चला कि कुछ व्यवस्था उचित नहीं थी।

कार्यकर्ताओं ने तो बड़े परिश्रम के साथ अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह किया, जहाँ उनकी अथवा विभाग की कोई कमज़ोरी प्रकट हुई तो वह उनके अफ़सरों की ओर से अनुचित निर्देशों के कारण से हुईं। जहाँ मेहमानों को कठिनाई हुई उसके बारे में अफ़सर उत्तरदायी हैं, इस्तिग़फ़ार करना चाहिए तथा भविष्य के लिए लाल किताब में लिख कर सुधार करने की चेष्टा करनी चाहिए।

लिफ़्ट काम नहीं कर रही थी, स्नान गृहों की भारी कमी थी, पानी की व्यवस्था उचित नहीं थी। सैक्योरिटी वाले अकारण ही रोकें डालते रहे, अनुवाद में भी कठिनाई का सामना हुआ, आवाज़ की भी समस्या बनी रही। कुछ मेहमानों ने शिकायत की कि हम ख़ुत्बः नहीं सुन सके। जलसे के चलते समय भी मैं प्रबन्धकों

को ध्यान दिलाता रहा। अफ़सर जलसा सालाना, अफ़सर जलसा गाह तथा आवाज़ के विभाग के इंचार्ज इसके लिए उत्तरदायी हैं। लोग यहाँ जलसा सुनने के लिए आते हैं, यदि सुनाने की व्यवस्था सही नहीं तो फिर जलसे का लाभ क्या है। शेष व्यवस्था में कमियों को सहन किया जा सकता है परन्तु जलसा सुनने की व्यवस्था में कोई कमी सहन नहीं की जा सकती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह कोई मेला नहीं है कि जहाँ लोग एकत्र हो जाएँ। आवाज़ न आने के कारण कुछ अवसरों पर पीछे मेले वाला दृश्य था। मेरे अनुमान के अनुसार कम से कम सात आठ हज़ार लोग ऐसे होंगे जिन्होंने जलसा सही नहीं सुना। प्रबन्धन कर्ता लोगों को उत्तरदायी बतलाते हैं, यदि लोग बातें कर रहे थे तो तर्बियत की कमी है तथा मिश्नरी इंचार्ज एवं मुरब्बी इसके लिए उत्तरदायी हैं। क्यूँ पूरे वर्ष भर तर्बियत नहीं करते, लोगों को दोषी न बनाएँ। अहमदी को ध्यान दिलाया जाए तो साधारणतः सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाता है। इस बार महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा अच्छा अनुशासन था। पुरुषों की तर्बियत के विभाग को अपनी चिंता करनी चाहिए।

उन्नति करने वाली क़ौमें अपनी कमज़ोरियों पर नज़र रखें, तभी सफल होती हैं। सब अच्छा है कह कर रास्ते बन्द न करें तथा न ही इसमें शर्म की बात है। अल्लाह तआला विभागों के अफ़सरों को अपने सुधार का सामर्थ्य प्रदान करे। इन सारी कमज़ोरियों के बावजूद अल्लाह तआला का हम पर यह उपकार है कि उसने हमारी कमज़ोरियों पर पर्दा डाल दिया और जलसे पर आए हुए अतिथि गणों ने सामान्यतः बड़ा अच्छा अनुभव किया। मेहमानों ने अपने मूल्यवान अनुभव बयान किए। जर्मनी की जमाअत को अल्लाह तआला का अति आभारी होना चाहिए कि उसने इस जलसे के माध्यम से लोगों में इस्लाम की मूल शिक्षा पेश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने मेहमानों के अनुभव पेश करते हुए फ़रमाया कि बलग़ारिया की एक ईसाई महिला वेरोनीका साहिबा जो वकील तथा पी.एच.डी डाक्टर हैं, कहती हैं कि ऐसा अति उत्तम जलसा आयाजित किया गया कि किसी के चेहरे पर घबराहट तथा परेशानी नहीं देखी। मुझे इस अवसर ने रूहानी रूप में बहाल किया। बलग़ारिया की ही एक अन्य ईसाई महिला नतालिया कहती हैं कि जलसा मेरे मस्तिष्क में सदैव चित्रित रहेगा, पहली बार हज़ारों मुसलमानों को एक साथ इबादत करते देखा, समस्त लोग प्रसन्नता के साथ मिले, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का सम्बोधन अति प्रभावित करने वाला था।

मक़दूनिया की एक ईसाई पत्रकार महिला कहती हैं कि जलसे की व्यवस्था अति उत्तम स्तर की थी। मेरे लिए अति गौरव पूर्ण है कि मैं ऐसे जलसे में शामिल हुई जिसमें विभिन्न धर्मों एवं राष्ट्रों के लोग शामिल थे। मक़दूनिया ही के एक अन्य पत्रकार कहते हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के भिन्न भिन्न विषयों पर सम्बोधनों ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। अनेक अहमदी मुसलमानों से बात करने का अवसर मिला, बड़ी मुहब्बत तथा मुसकुराहट के साथ बात करते थे। मुहब्बत सबके लिए नफ़रत किसी से नहीं का अमली नमूना देखा तथा इसी मोटो (लक्ष्य) से दुनिया में अमन हो सकता है।

सलवाकिया की एक महिला टीचर मारटोना साहिबा कहती हैं कि मेहमान नवाज़ी का ऐसा नमूना कभी नहीं देखा। बैअत तथा नमाज़ के दौरान अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रख सकी। सलवाकिया के एक

अन्य मेहमान कहते हैं कि जलसे से पहले इस्लाम के बारे में कुछ पता नहीं था। जलसे में शामिल होकर मुझे अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर का ज्ञान प्राप्त हुआ। अहमदियों ने बड़े लगन और जोश से मेहमानों की सेवा की। सलवाकिया के एक अन्य मेहमान कहते हैं कि मुझे अहमदियों के शिष्टाचार तथा मेहमान नवाज़ी ने बड़ा प्रभावित किया। अहमदी अपने धर्म के अनुसार कर्म करने वाले हैं। अलबानिया के एक मेहमान प्रोफ़ैसर डाक्टर साहब कहते हैं कि जलसा अति महान था, इस जलसे में देखा कि ख़िलाफ़त ही आपकी एकता का आधार है।

बोसनिया से इतिहास के प्रोफ़ैसर साहब कहते हैं कि जलसे में हर चीज़ योजनाबद्ध थी, बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की पहली तक़रीर से ही मेरा दिल साफ़ हो गया था। उनसे मुलाक़ात ने मेरे मस्तिष्क पर अति सकारात्मक प्रभाव छोड़ा तथा मुझे अत्यंत शांति अनुभव हुई। बोसनिया से रैड क्रास की सैक्रेट्री इन्दरा हैदर साहिबा कहती हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से मुलाक़ात मेर लिए बड़ी ख़ुशी का कारण रही। ख़िलाफ़त ने विश्व स्तर पर अहमदियों को एक लड़ी में पिरोया हुआ है, मुझे मुसलमान होने पर गर्व की अनुभूति हुई।

जार्जिया की एक महिला कहती हैं कि पहली बार जलसा देखने का अवसर मिला, छोटे बड़े सब कठोर परिश्रम से काम कर रहे थे। विश्व व्यापी बैअत को देख कर भावनाओं पर नियन्त्रण रखना कठिन था। जमाअत के ख़लीफ़ः ने क़लमी (प्रचार प्रसार) जिहाद की विचार धारा हमारे सामने रखी जिसकी मैं शत-प्रतिशत पुष्टि करती हूँ। मेरा सुदृढ़ विश्वास है कि भविष्य में दुनिया इस्लाम के बारे में चिंतन करेगी तथा इसके माध्यम से ख़ुदा को पहचानने वाले बनेंगे।

जार्जिया के एक सुन्नी स्कालर कहते हैं कि ईसाईयत छोड़ कर इस्लाम क़बूल किया, मदीना मुनव्वरा में रहा, सुना था कि अहमदो हमें काफ़िर कहते हैं तथा उनकी आस्था भिन्न है। जलसे में जमाअत को निकट से देखा, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के सम्बोधनों को ध्यान पूर्वक सुना, आप लोगों को काफ़िर कहना ग़लत है। जलसे के तीन दिनों में मेरे समस्त सवालों के जवाब मिले।

कोसोवो से आने वाले ऐजुकेशन डाईरैक्टर कहते हैं कि जलसे के दिनों में सम्बोधन सुने, जो मेरे मस्तिष्क पर चित्रित रहेंगे। मेहमान नवाज़ी का अनुभव हमारे दिलों में सदैव रहेगा। कोसोवो के मेयर कहते हैं कि इस मूल्यवान जलसे में एकता एवं बन्धुत्व के दृश्यों ने मेरे मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के भाषण प्रभाव करने वाले थे, आतिथ्य, मेहमान नवाज़ी अद्भुत थी।

कैमरून के एक चीफ़ इमाम साहब कहते हैं कि पहली बार इतने बड़े समागम में शामिल हुआ हूँ। आश्चर्य जनक है कि विभिन्न रंगों के लोग एक परिवार की भांति मिले। जमाअत के इमाम के सम्बोधन विवेक पूर्ण तथा इस्लामी शिक्षा की छाप थे, यदि हम इसके अनुसार कर्म करें तो जीवन जन्नत बन जाए।

लिथवानिया की एक महिला हैं जिन्होंने स्वयं सेवा के रूप में इस्लामी उसूल की फ़लास्फ़ी का लिथवानियन भाषा में अनुवाद किया है, कहती हैं कि जलसा सालाना ने मुझे शानदार अवसर दिया कि जमाअत को परख सकूँ। अहमदिया जमाअत अपने लक्ष्य की ओर वास्तविक रंग में चली जा रही है।

तुर्क महिला टीचर यासमीन साहिबा, जो जर्मनी में रहती हैं, कहती हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का सम्बोधन मेरे सवालों का जवाब था। जलसे का वातावरण मुझे पसन्द आया। इतने अधिक लोगों का जमा होना तथा प्रेम की लड़ी में पिरोये हुए होना, एक विचित्र एवं विशेष बात थो। सर्बिया के एक जर्नलिस्ट कहते हैं कि जलसे में आपकी सुन्दर व्यवस्था ने चकित कर दिया, न प्रबन्ध कर्ताओं में तथा न ही चालीस हज़ार लोगों में कोई बुराई दिखाई दी। सर्बिया की ही एक अन्य जर्नलिस्ट महिला कहती हैं कि मेरे दिल में व्यवस्थापकों तथा सम्मिलित होने वालों के लिए मुहब्बत की भावनाएँ हैं। ख़लीफ़ः के महिलाओं के लिए सम्बोधन ने बड़ा प्रभावित किया।

एक जर्मन ईसाई कैथोलिक टी वी के प्रतिनिधि कहते हैं कि ख़लीफ़ः का सम्बोधन प्रभाव पूर्ण था। सम्बोधन ऐसा था कि केवल सुन लेना की पर्याप्त नहीं, चिंतन मनन करना चाहिए। एक जर्मन महिला जो जलसे में आदर भाव के साथ दुपट्टा ओढ़े बैठी रहीं, कहती हैं कि सम्बोधन के समय मेरे हृदय पर इतना अधिक प्रभाव हुआ कि मेरी आँखें नम हो गईं, ख़लीफ़ः की बातें दिल को छू लेने वाली थीं।

जलसा जर्मनी में मीडिया कवरैज अच्छी हुई, चार टी वी चैनल्ज़ के द्वारा इकतालीस मिलयन, गयारह समाचार पत्रों के द्वारा पचास मिलयन, पाँच रेडियो स्टेशन्ज़ के द्वारा चौदह मिलयन तथा ऑन लाईन के माध्यम से दो मिलयन लोगों तक ख़बर पहुंची। उनका विचार है कि इस प्रकार एक सौ आठ मिलयन तक जलसे की कवरैज पहुंची है, अल्लाह तआला इसके सुन्दर परिणाम पैदा करे।

लोगों की जो कुछ अभिव्यक्तियाँ बयान की हैं, अल्लाह तआला का उपकार एवं आभार है कि वह हमारी त्रूटियों पर पर्दा डालता है। विभिन्न मस्जिदों के उद्घाटन पर भी लोगों ने सकारात्मक अभिव्यक्तियाँ की हैं कि इस्लाम के बारे में हमारे विचार बदल गए हैं, शिकायत भी की है कि हमारे जानकार अहमदियों ने हमें इस्लाम को सुन्दर शिक्षा के विषय में पहले से अवगत नहीं किया। अतः हर अहमदी को हीन भावना से रिक्त होकर इस्लाम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का परिचय करवाना चाहिए। केवल पम्फ़लैट बांट देना उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता, लोगों में अभी भी धर्म की बातें सुनने में रूचि है।

हमें हर जगह अपने निरीक्षण करने की आवश्यकता है, कमज़ोरियों पर भी ध्यान रहना चाहिए, बेहतरी की बड़ी गुंजायश है, सुन्दर से सुन्दरतम की खोज जारी रहनी चाहिए। दुआ करके तथा अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए काम को आरम्भ करें, प्रबन्धकों तथा शामिल होने वालों को सदैव जलसे के उद्देश्य को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। अल्लाह तआला हम पर दया करे तथा भविष्य में सबको सुन्दर रंग में जलसे के उद्देश्य को पूरा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ۔ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131